कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें : www.cicr.org.in

अंक: 4 खंड: 6 जून 22–30, 2015

वैज्ञानिक वार्ता

डॉ. एस.माणिक्कम, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन) "भारत में जीएमओ के विनियमन" पर दि. 26 जून, 2015 को एक भाषण दिया । अपनी प्रस्तुति के दौरान, पर्यावरण, मंत्रालय वन और जलवायू (एम.ओ.आ.एफ एवं सी.सी) यूनेफ-जी.आ.एफ द्वारा समर्थन किया गया "जैव सुरक्षा पर द्वितीय अवस्था क्षमता निर्माण परियोजना" द्वारा दिया नियामक अनुपालन के लिए सीमित क्षेत्र परीक्षण की निगरानी पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान प्राप्त ज्ञान पर चर्चा की । प्रस्तुति, भारत में नियमित अनुवांशिक डिझाईन पौधों के साथ आयोजित निहित एवं सीमित क्षेत्र परीक्षणों की विचार के आधारित विषयों, इस तरह के क्षेत्र परीक्षण के आयोजन के लिए दिशा निर्देशों और शर्तों, अनुवांशिक रुप में डिजाईन किए गये पौधों के नियमन और निगरानी के लिए भारत में विभिन्न नियामक प्राधिकारीयॉ, अनुवांशिक रुप में डिजाईन किए गये पौधों के क्षेत्र परीक्षण शुरू करने के लिए प्रयोग प्रक्रियाओं, भंडारण, परिवहन के लिए मानक परिचालन प्रक्रियाओं, क्षेत्र परीक्षण के प्रबंधन, अभिलेख रखने, क्षेत्र परीक्षणों की समाप्ति, नियमित ट्रांसजेनिक पौधों का विनाश, सीमित क्षेत्र परीक्षण के फसल कटाई के बाद का प्रबंधन आदि पर थी । इन के अलावा, निगरानी टीमों के लिए संदर्भ की शर्तें, विनियमित परीक्षणों की निगरानी प्रक्रियाओं, निगरानी रिपोर्ट को पूरा करने, आदि पर भी विस्तार से चर्चा की गई । इसके अलावा, नियामक प्रधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करके वातावरण में विनियमित अनुवांशिक डिझाईन बनाए पौधे की आकस्मिक निर्मोचन को कम करने का कदम उठाए जाने के लिए भी चर्चा की गई ।

स्थानांतरण/कार्यभार ग्रहण करना

डॉ. एन. गोपालकृष्णन, सहायक महानिदेशक, (वाणिज्यिक फसलों), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, के.क.अ.सं., क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर में अनुरोध स्थानांतरण पर दि. 22 जून, 2015 को प्रधान वैज्ञानिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किए। के.क.अ.सं., क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर के वैज्ञानिकों, ने उन्हें स्वागत किया ।

के.क.अ.सं., कोयंबत्तूर के वैज्ञानिकों ने ए.टी.एम.ए के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया

भा.कृ.अ.प – के.क.अ.सं., के वैज्ञानिकों, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर ने "कपास के किसानों द्वारा सामना की वर्तमान चुनौतियां और आई.पी.एम' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और अंदियूर, ईरोड जिले, तमिलनाडू में अट्मा योजना के तहत दि. 24.6.2015 को 40 किसानों को व्याख्यान दिया । डॉ. एस. माणिक्कम, प्रमुख वैज्ञानिक ने क्षेत्र के लिए उपयुक्त सुधारित कपास की किस्मों पर व्याख्यान दिया । उन्होंने सूरज और अंजलि की तरह पारंपरिक किस्मों सहित उच्च घनत्व रोपण प्रणाली अपनाने के लिए किसानों से आग्रह किया जो क्षेत्र में उगता जा रहा बीटी कपास के संकर की तुलना में अधिक उपज दे देंगे ।

इसके अलावा, इस क्षेत्र स्टेम वीविल से प्रवृत्त होने के कारण उन्होंने एच.डी.पी.एस के तहत कपास की खेती करने पर बल दिया जिससे बेहतर पौधा जनसंख्या बनाए रखने में एवं उच्च कपास की उपज प्राप्त किया जाने में किसानों की मदद कर सकते हैं । उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वर्षा आधारित शर्त के तहत देसी कपास की खेती करें जो जैविक और अजैविक तनाव दोनों के लिए सहिष्णु हैं क्योंकि विभिन्न अंत का उपयोग के रूप में इस कपास की मांग बढ़ जाती है ।

डॉ. शंकरनारायणन ने कपास में पैदावार बढ़ाने के लिए विभिन्न कृषि तकनीकों पर चर्चा की । उन्होंने खेती की लागत कम करने के लिए आवश्यकता आधारित उर्वरक, एकीकृत खरपतवार प्रबंधन उपयुक्त शाकनाशी, अंतराल फसल / बहु स्तरीय फसल, जल प्रबंधन और अन्य सरल तकनीकों का प्रयोग लागू करने के लिए किसानों को सलाह दी । उन्होंने श्रम कमी वातावरण के तहत इस्तेमाल किया जा सकता विभिन्न कृषि सामग्री के बारे में विस्तार से बताया ।

किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. धाराजोति ने कीटनाशक छिड़काव कम करने में आई.पी.एम प्रौद्योगिकियों के महत्व पर बल दिया । उन्होंने प्रभावी एवं उपयोगी लागत *स्पोडोप्टेरा* समस्या को कम करने के लिए रेंडी का तेल उपजाना, चूसने कीट हेतु प्राकृतिक विरोधियों का निर्माण करने के लिए अंतर फसल के रूप में लोबिया उपजाना, कीटनाशकों के पूर्णतः चक्रानुक्रम, कीट निगरानी और अन्य आई.पी.एम प्रौद्योगिकियों के लिए सुझावों दिया । उन्होंने किसानों को सलाह दी कि स्टेम वीविल के प्रबंधन के लिए वयस्क भृंग के निर्माण को कम करके कपास के डंठल तुरंत जलान द्वारा नष्ट करें । उन्होंने किसानों को *राटूनिंग* से बचने के लिए सलाह दी । उन्होंने कीट के प्रबंध में प्राकृतिक विरोधियों के महत्व पर किसानों को समझाया । चर्चा के दौरान किसानों उत्साहित थे और प्रदर्शनों जैसे एच.डी.पी.एस. आई.आर.एम. और कृषि मशीनीकरण लेने में रुचि रखते थे । उन्होंने कपास की खेती में विभिन्न उपयोगी सुझाव देने के लिए वैज्ञानिकों को शुक्रिया अदा किया ।

बैठकों

- डॉ. संध्या क्रांति, प्रधान, फसल संरक्षण, के.क.अ.सं., नागपुर ने दि. 23.6.2015 को सी.सी.आर.आय, नागपुर में आय.एम.सी की बैठक में भाग लिया ।

- डॉ. अ.हि.प्रकाश, ने फसल मानक, अधिसूचना और कृषि फसलों के लिए किस्मों के निर्मोचन के केन्द्रीय उप-समिति की 72 वीं बैठक में दि. 25 जून, 2015 को भाग लिया जो माननीय उप महानिदेशक (फ.वि), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की अध्यक्षता में हुई । बैठक के दौरान के.क.अ.सं., के किस्मों सी.आय.सी.आर.एन.ए 1003 एवं सी.सी.एच-2623 अधिसूचना के लिए स्वीकार कर लिए गये ।

विदाई

कु. उमा वैद्यनाथन, निजी सचिव, श्री. एच.पी. इन्गले, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, श्री. ए जे. ठाकुर, कुशल समर्थन कर्मचारी और श्री. वी.एल. राक्डे, कुशल सहायक कर्मचारी को कर्मचारी कल्याण क्लब की ओर से दि. 29 जून, 2015 को विदाई प्रदान की गयी । डॉ. के.आर. क्रांति, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – के.क.अ.सं., ने इन चारों को इस अवसर पर सम्मानित किया ।

निर्मित एवं प्रकाशित:	डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक:	डॉ. एस. एम. वास्निक
संपादकों:	डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम. शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन:	डॉ. एम. सबेष एवं श्री. एस. सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद:	श्रीमति. के. सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश

प्रमाण: कपास नई खोज, अंक – **4**, खंड – **6, 2015**, भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है ।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com